कविता का शिल्प –सौन्दर्य

आत्मपरिचय	हरिवंशराय बच्चन	तत्समनिष्ठ खड़ीबोली	मुक्त छंद	अनुप्रास अलंकार,यमक *,पुनरुक्तिप्रकाश *,*विरोधाभास	कवि विरोधो के बीच सामंजस्य बिठाकर जी रहा है एक ओर जगजीवन के भर लिए फिरता है दूसरी ओर प्यार लिए फिरता है |
दिन जल्दी -2 ढलता है	हरिवंशराय बच्चन	,,,	,,,,,,	*रूपक *अनुप्रास *पुनरुक्ति प्रकाश	दिन रूपी पंथी (सूरज) तीव्रतर चलता है बच्चे नीड से झाँक रहे होंगे इस आशा में चिड़िया जल्दी जल्दी उडती है कवि का कोई इन्तजार नही कर रहा कवि के पैर रुक जाते है ये प्रश्न उसे व्याकुल कर देता है
पतंग	आलोक धन्वा	खड़ीबोली	,,,,,,,,,	अनुप्रास ,पुनरुक्ति प्रकाशदृश्य बिंब ,स्पर्श बिंब , श्रव्य बिंब	बच्चों की महत्त्वकांक्षा का चित्रण है ,पतंग उड़ाते समय बच्चे गिरने से बच जाते है तो आत्मविश्वास से भरकर फिर से पतंग उड़ाते है
कविता के बहाने ,भाषा की बात	कुँवर नारायण सिंह	खड़ीबोली	,,,,,,,,,,	नवीन उपमानो का प्रयोग ,अनुप्रास	कविता को बचाने की बात कही है ,कविता की समानता चिड़िया ,फूल ,बच्चे से की है
कैमरे में बंद अपाहिज	रघुवीर सहाय	खड़ीबोली	,,,,,,,,,	अनुप्रास ,पुनरुक्ति प्रकाश	विकलांग की पीड़ा का व्यापार ,कार्यक्रम को लोकप्रिय बनाने के लिए उसे रुलाने का प्रयास करना |
सहर्ष स्वीकार है	मुक्तिबोध	खड़ीबोली	,,,,,,,,,	नवीन उपमानों ,प्रतीकों का प्रयोग	प्रिय को कवि की सभी वास्तु प्रिय है क्योंकि वह कवि की मौलिक है ,कवि अपने प्रिय से कहता है कि वह उसे भूल जाए तो वह उसे पाताली अँधेरे में डाल दे दक्षिण ध्रुव अन्धकार में लुप्त हो जाऊं
उषा	शमशेरबहादुर	,,,,,,,,,,	,,,,,,,,	उत्प्रेक्षा ,उपमा मानवीकरण दृश्य बिंब ,रंग संयोजन	उषा का चित्रण गाँव के उपमानों से किया भोर का आकाश शंख पर की नीली आभा ,स्लेट पर लाल खड़िया ,राख से लीपा चौका सिल पर केसर की रेखा आदि नवीन उपमानों से उषा का चित्रण सूर्योदय के साथ उषा का जादू टूट जाता

					है |
बादल –राग	निराला	,,,,,,,,,,,,	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	रूपक ,अनुप्रास पुनरुक्ति प्रकाश	बादल को क्रान्ति का प्रतीक माना है ,समाज के पीड़ित दलित सर्वहारा वर्ग बादल के आने से खुश है ,क्योकि बादल के आने से उनका कल्याण होगा पूंजीपति भयभीत है क्योकि उनके अधिकार ,सता पर खतरा है |
कवितावली	तुलसीदास	ब्रज भाषा	कवित्त ,सवैया	रूपक ,अनुप्रास ,पुनरुक्ति प्रकाश	समाज में बेरोजगारी का चित्रण किया है ,भिखारी को भीख ,नौकर को नौकरी नहीं मिल रही ,चरों ओर हाहाकार है दरिद्रता रूपी रावण ने समाज को दबा रखा है |अपने ऊपर के जातिगत आक्षेपों का विरोध करते हुए कवि कहते है कि मुझे किसी कोई सम्प्रदाय से कुछ लेना देना नहीं और न
राम लक्ष्मण मूर्च्छा	तुलसीदास	अवधी भाषा	दोहा – चोपाई ,सोरठा	उत्प्रेक्षा ,अनुप्रास पुनरुक्ति प्रकाश	लक्ष्मण के शक्ति लगने पर राम विलाप करते हुए लक्ष्मण के चरित्र की विशेषता बताते है |हनुमान जड़ी बूटी लेकर आते है तो चारों ओर का वातावरण वीर रस से भर जाता है सब दुःख भूलकर जोश से भर जाते है |रावण कुंभकर्ण को जगाता है और राम की सेना की बात बताता है ,कुंभकर्ण उसे कहता है कि तू माँ सीता का अपहरण करके अपना कल्याण चाहता है |??
रुबाईयाँ	फिराक गोरखपुरी	उर्दू मिश्रित खड़ीबोली	रुबाइयाँ	अनुप्रास ,पुनरुक्ति प्रकाश	माँ अपने बच्चे को बाल सुलभ खेल खिला रही है बच्चा हँसता है ,बच्चे को निह्लाती है कपडे पहनाती है ,उसके घर में दीपक जलाती है ,रक्षाबंधन का भी चित्रण है |
गजल	,,,,,,,,	,,,,,,,,,,,,,,,	शेर	विरोधाभास ,अनुप्रास पुनरुक्ति प्रकाश	1 से 5 शेर महत्त्वपूर्ण है |सभी शेर अलग-अलग भाव पर आधारित है |प्रकृति का चित्रण ,मानवीकरण अलंकार के द्वारा सुन्दर चित्रण है \
छोटा मेरा खेत	उमा शंकर जोशी	अनुवादित रचना	मुक्त छंद	अनुप्रास ,पुनरुक्ति रूपक	कवि कर्म और किसान के कर्म की तुलना कवि ने एक रूपक बांधकर की है किसान कीफसल की कटाई एक बार ही होती है किन्तु कवि की कविता रूपी फसल की कटाई अनंत काल तक चलती है और रस के अक्षय पात्र का निर्माण

					होता है जिसका रस कभी समाप्त नहीं होता है।
बगुले के पंख	उमा शंकर जोशी	अनुवादित रचना	मुक्त छंद	अनुप्रास ,पुनरुक्ति प्रकाश	आकाश में उड़ते हुए बगुले कवि को सम्मोहित करते है उसकी दृष्टि को अपनी माया में बाँध कर ले जाती है